

## श्रीराम-कृष्ण की एकता

भगवान् भगवान् ही हैं । उनका नाम श्रीराम रखो या श्रीकृष्ण । चाहे उनका मुकुट सीधा खड़ा हो या बाँकी अदा से साथ बायें अथवा दायें लटक रहा हो । वे ब्रज के वन-निकुंज में गायें चरा रहे हों; गोपियों से छेड़खानी कर रहे हों या धूलि में लोट रहे हों; अथवा श्रीअवध के दरबार में राजसिंहासन पर गम्भीर भाव से बैठकर राजकाज का संचालन कर रहे हों । नाम, पोशाक, काम या गुणों के प्रकटीकरण के भेद से भगवान् में भेद नहीं हो जाता । वे खेल के, खिला के, डाँट के, पीट के, नाच के, गा के-हर हालत में जीवों पर अनुग्रह दृष्टि ही वृष्टि करते रहते हैं ।

श्रीभक्तकोकिलजी मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम और लीलापुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण में कोई भेदभाव नहीं रखते थे । उनके मनपर, अंगपर, वस्त्रपर श्रीवृन्दावनेश्वरी, श्रीराधा-रानी के ही नाम का बोलबाला था । शरणागत भक्तों को नटवर श्यामसुन्दर की भक्ति का ही प्रायः उपदेश करते थे । कोई सेवक भगवान् श्रीरामचन्द्र की भक्ति का मार्ग पूछता तो कहते-‘बड़ी दरबार, बड़ी सरकार । उनकी सेवा में रहने के बड़े-बड़े अदब कायदे, लोकात्तर शील-स्वभाव, सतत् सावधानी, सच्ची निष्कामता की आवश्यकता है ।’ कोई बहुत आग्रह करता तो बालक श्रीराम की उपासना बताते । युगल की सेवा में जाने की आज्ञा

नहीं देते थे ।

जिस समय श्रीभक्तकोकिलजी मीरपुर में निवास कर रहे थे, अनेक भक्त उनकी सेवा में आते जाते रहते थे । एक भक्त के हृदय में श्रीब्रजसरकार और श्रीअवधसरकार के सम्बन्ध में भेद-भावना थी । एक दिन जब वह भजन में बैठा तो देखता क्या है कि युगल सरकारों के दिव्य दर्शन हो रहे हैं । एक कल्पवृक्ष के नीचे दिव्य मण्डप है । उनमें सूर्य के समान चमकते हुए दो सिंहासन हैं । दोनों पर दोनों युगल सरकार विराजमान हैं । थोड़ी देर में उसने यह भी देखा कि श्रीभक्तकोकिलजी सहचरी रूप में मंगल द्रव्यों का थाल सजाकर युगल सरकार की पूजा करने के लिए आ रहे हैं । अब भक्त के मन में यह आया कि देखें श्रीस्वामीजी पहले किसकी पूजा करते हैं ? उसने देखा-श्रीस्वामीजी युगल सरकार के पास पहुँचते ही दो रूप हो गये और एक साथ ही दोनों की पूजा करने लगे । यह देखकर भक्त को बहुत ही आल्हाद् हुआ और उसका भेद-भाव मिट गया ।